विज्ञान भारती विदर्भ प्रदेश मंडळ

गीत

विज्ञान की ध्वजा ले नव चेतना जगी है।
विज्ञान संस्कृति के वह गीत गा रही है।।धृ।।

यह है विराट सृष्टी, चैतन्यरूप सारी।
इसको परख रहा है विज्ञान का पुजारी।।
विज्ञान की रंगों में नवसृजनता जगी है।।१।।

जीवन सुखी बनाने विज्ञान प्रेरणा दे।
आध्यात्मज्ञान से ही विज्ञान भी दिशा ले।
यह मेल ही विभव को नव अर्थ दे रही है।।२।।

विज्ञान क्षेत्र में भी भारत ही अग्रसर था।
सारे ही विश्व में यह सम्मान से खड़ा था।।
फिर से इसी क्षितिज में हुंकार उठ रही है।।३।।

संकल्प, ध्येयसाधन, विज्ञान ही सिखाता।
सहयोग, चिर-परिश्रम, पुरूषार्थ को जगाता।।
वह आर्षवाणी ऐसा संदेश दे रही है।।४।।

सानन्द सब सुखी हो सब हो सदा निरोगी।
कल्याण हो सभी का कोई दुखी न रोगी।।
विज्ञान के सहारे यह आस जग रही है।।५।।

विज्ञान की ध्वजा ले नव चेतना जगी है।
विज्ञान संस्कृति के वह गीत गा रही है।